**शोध-पत्र**

**भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्थिति**

**राहुल गुप्ता**

कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी

फगवाड़ा, पंजाब

**डॉ बृजेन्द्र कुमार अग्निहोत्री**

सहायक प्रोफेसर (हिंदी),

मानविकी संकाय

लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी

फगवाड़ा, पंजाब

**शोध-सार**

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। प्रत्येक राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक धरोहर तथा सामाजिक मूल्यों से होती है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप निःसंदेह रूप से समन्वयवादी तथा लोक कल्याणकारी रहा है। प्राचीन कल से विश्व गुरु की भूमिका वाला भारत अपने आप में सांस्कृतिक विरासत भी समाए हुए है। भारतीय संस्कृति कुछ ऐसा रहा है जो नि:संदेह रूप से लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। ऐसा माना जाता है की भारतीय संस्कृति व सभ्यता सबसे प्राचीनतम एवं समृद्ध सभ्यता रही है। इससे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी भी माना जाता है । अन्य देशों की संस्कृतियाँ समय की प्रवाह के साथ नष्ट होती रही है किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत मूल्यों के साथ चली आ रही है और भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसका जगतगुरु होना है और भारतीय संस्कृति मे कई धार्मिक प्रणालियों जैसे की सनातन धर्म , जैन धर्म ,बौद्ध धर्म , सिख धर्म और सिंधी धर्म का जनक है।

भारतीय संस्कृति के बारे में पं. मदनमोहन मालवीय का कहना है कि ‘‘**भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ की पवित्र भावना में निहत है।“**

इसी भावना के साथ भारतीय संस्कृति का विश्व स्तर पे काफी प्रसार हुआ है। प्रस्तुत शोध लेख में भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्तर पर प्रसार एवं सांस्कृतिक मूल्यों और धार्मिक प्रसार भारतीय भाषा हिंदी का योगदान भारतीय संस्कृति में आदि बिन्दुओं की चर्चा करेंगे।

**बीज शब्द:** संस्कृति, समन्वयवादी, सभ्यता, वैश्विक, धार्मिक, परंपरागत, सिद्धांत

* **संस्कृति शब्द का अर्थ:**

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है-संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि।

* **भारतीय संस्कृति की अवधारणा**

संस्कृति किसी भी समाज या राष्ट्र का आईना होती है। भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति यह बात इसके लोगों संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है। हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सूखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठार की ठंडक तक, भारतीय जीवन शैलियाँ इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। भारतीय संस्कृति अपनी भौगोलिक स्थितियों के सामान अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते है, अलग-अलग धर्मों का पालन करते है अलग तरह के वस्त्र पहनते है विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का आहार करते है किन्तु इनका स्वभाव एक जैसा होता है। चाहे कोई ख़ुशी का अवसर हो या दुःख का क्षण, लोग पुरे दिल से इसमें भाग लेते है, एक साथ ख़ुशी और दर्द का अनुभव करते है। हालांकि संस्कृति की अवधारणा इतनी विस्तृत है कि उसे एक वाक्य में परिभाषित करना सम्भव नहीं है। तथापि, यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन के दिन-प्रतिदिन के आचार-विचार, जीवन शैली, कार्य-व्यवहार, धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक, नीतिगत कार्य-कल्पों, परम्परागत प्रथाओं, खान-पान, संस्कार इत्यादि के समन्वय को संस्कृति कहा जाता है। भारतीय संस्कृति की प्रेरणादायक बिन्दुओं पर विचार करें तो हम देखेंगे की इस संस्कृति में उदार, गुणग्राही व समन्वयशील रही है। संवेदना, कल्पना, आचरण, भाव, संयम, नैतिकता, उदारता व आत्मीयता के तत्व अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। नीति और सदाचार के रक्षा करने से लेकर कर्मफल का सिद्धांत व पुनर्जन्म के प्रति आस्था एक ऐसी उत्तम दार्शनिक ढाल है जो व्यक्ति को अनैतिकता की ओर जाने ही नहीं देती। भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। यही कारण है की विश्व भर के लोग हमारी भारतीय संस्कृति को करीब से समझना और जानना चाहते हैं। इस देश की हर प्रान्त की अपनी विशेषताएँ है अपनी संस्कृति है जो की उस प्रान्त की लोक कथाओं में नज़र आती है। सभी प्रांतों के अपने लोक संगीत व लोक नृत्य होते है इसमें वहाँ की परम्पराओं और समुदायों की भावना की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है यहाँ की संस्कृति, धर्म, खान-पान, रहन-सहन, लेकिन जो सबसे ज्यादा अलग है, वो है भारत में मनाये जाने वाले त्यौहार, उत्सव या पर्व और इन उत्सवों, त्योहारों पर किये जाने वाले लोक नृत्य जो भारतीय संस्कृति को और अधिक रोचक बनती है। इस महान संस्कृति में अनेकता में एकता भी देखने को मिलती है। लोककल्याणकारी की कामना भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान है। इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद जी का मत है की **"संसार नहीं हम संसार के ऋणी है। यह तो हमारा सौभाग्य है की हमें संसार में कुछ कार्य करने को मिला है। संसार की सहायता करने में हम वास्तव में स्वयं को ही कल्याण करते है। "**

* **भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ**

बड़ो के लिए आदर और श्रद्धा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। बड़े खड़े है तो उनके सामने न बैठना, उनको खाना पहले परोसना जैसी क्रियाएँ अपनी दिनचर्या में प्राय: दिखाई देता है जो हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। हम देखते है की युवा कभी अपने बुजुर्गो को उनके नाम लेकर सम्बोधित नहीं करते है। सभी बड़ो, पुरुषों, और महिलाओं का आशीर्वाद प्राप्त और उन्हें मान-सम्मान देने के लिए हम उनके चरण स्पर्श करते है। छात्र अपने शिक्षक के पैर छूते है। मन, शरीर, वाणी, विचार, शब्द और कर्म में शुरदता हमारे लिए महत्वपूर्ण है इसलिए हमें कभी भी कठोर और अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह सभी गुण हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ और गुण है।

हम भारतीय संस्कृति की ओर विशेषताओं की बात करे तो, सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार, रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज-त्यौहारों में भी समानता है। 1400 बोलियों तथा औपचारिक रूप से मान्‍यता प्राप्‍त 18 भाषाओं की विविधता के बावजूद, संगीत, कला साहित्य नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है। संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक आस्थाओं एवं विश्वास का महादेश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए न सिर्फ विस्मयकारी वल्कि अनुपालन के योग्य बन गया है। आज दुनिया के अनेक देशों ने अपनी सुख सम्पदा और तरक्की के असीमित साधन जुटा लिए हों किन्तु सच्चा सुख, शान्ति, मानवता, आध्यात्मिकता और प्रकृति प्रेम जो भारत में दिखाई देता है वह अन्यत्र कहीं नहीं. क्योंकि भारतीय संस्कृति जिन मूल गुणों व मूल्यों से भारी हुई है वही इसे महान बनाते है. आज जहां विश्व की हर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में निहित है वही वैश्विक उन्नति का आधार भी भारतीय संस्कृति ही है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक गीत का भाव है – “**यहाँ आर्य भी आए, अनार्य भी आए, द्रविड़, चीनी, शक, हूण, पठान, मुगल सभी यहाँ आए, लेकिन कोई भी अलग नहीं रहा, सब इस महासागर में विलीन होकर एक हो गए।“**

* **भारतीय संस्कृति का प्रसार**

प्राचीनकाल के सभ्य संसार में भारत की स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। हिन्द महासागर के तथ पर स्थित होने के कारण भारत की केंद्रीय स्थिति थी। इसलिए वह तत्कालीन सभ्य और सुसंकृत देशो के समुद्री भागो के बीच में स्थित होने के कारण वह उन देशो में फैली सभ्यताओं के संपर्क में आता रहता था। इसी में सुमात्रा, जावा ,म्यंमार, और मलाया जैसे देश भारतीय संस्कृति के संपर्क में आकर सभ्य बने। अभी आधुनिककाल में भी इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति के तौर पे भगवान गणेश की पूजा की जाती है एवं इंडोनेशिया में संस्कृत भाषा का उपयोग भी किया जाता है। लेकिन सिर्फ मध्य में स्थित होने के कारण ही उन पर इसका हमारी संस्कृति का प्रभाव ही नहीं पड़ा बल्कि व्यापार की वृति ने इसको और अधिक बढ़ावा दिया, क्योंकि संस्कृति का प्रसार विजय और व्यापार के साथ होता है। भारतीय संस्कृति के प्रसार में भारतवासियों की व्यापार यात्रियों ने अनुपम सहयोग प्राप्त किया।

* **प्राचीनकाल भारतीय संस्कृति की स्थिति**

प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। हम देखे तो भगवान् बुद्ध ने भारतीय संस्कृति को विश्व के हर कोने तक पहुंचाया। उनके बाद सम्राट अशोक ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। इसलिए भगवान् बुद्ध की प्रतिमा लगभग आपको हर देश में देखने को मिल जाएगी। अगर हम सबसे सभ्य सभ्यता की बात करे तो उसमे हम देखेंगे की मोहनजोदड़ो और हड़पा सबसे आधुनिक और मॉडर्न सभ्यता मानी जाती है। इस बिंदु पर विचार करना जरूरी है कि हड़प्पाकालीन सभ्यता की पंरपराएँ एवं प्रथाएँ आज भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिल जाती है, यथा-मातृदेवी की उपासना, पशुपतिनाथ की उपासना, यांग-आसन की परंपरा इत्यादि। इसके अलावा भारतीय संस्कृति में ‘प्रकृति मानव सहसंबंध’ पर बल दिया गया है। हमारी संस्कृति मानव, प्रकृति और पर्यावरण के अटूट एवं साहचर्य संबंधों को लेकर चलती है। भारतीय उपनिषदों में **‘ईशावास्यइंद सर्वम्’** अर्थात् **जगत् के कण-कण में ईश्वर** की व्याप्तता को स्वीकार किया गया है। प्राचीन भारत के धर्म, दर्शन, शास्त्र, विद्या, कला, साहित्य, राजनीति, समाजशास्त्र इत्यादि में भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरुप को देखा जा सकता है।

**यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां, सब गिर गए जहाँ से अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा,**

* **मध्यकाल में भारतीय संस्कृति की स्थिति**

मध्यकाल में भारत के ऊपर बहुत आक्रमण हुए। जिसके कारण भारतीय संस्कृति में यहां के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहां की संस्कृति में घुल-मिल गए हैं। अरबों, तुर्कों और मुगलों के माध्यम से यहाँ इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा और नवागत संस्कृतियों की अच्छी बातों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया। मध्यकाल में भारत पर हज़ारो वर्ष तक विदेशियों का राज़ रहा। इस काल में भले ही धर्म की बात की जाती है परन्तु हमने यह भी देखा की विदेशी संस्कृति की नीव डाली गयी और कुछ हद तक चली भी लेकिन उनके जाने के बाद ही उसका विकास रुक गया तथा वे संस्कृति हमारे समाज से बाहर होने लगी।

**कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,**

**सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहाँ हमारा।’’**

* **आधुनिक य वर्तमान काल में भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्थिति**

वैश्वीकरण और आधुनिकरण के मध्य में गहरा संबंध है। जब भारतीय संस्कृति का स्वरूप आधुनिक हो गया तब निश्चित दिशा में होने वाले परिवर्तन भी दिखाई देने लगे। भारतीय संस्कृति का नूतन आयाम ब्रिटिश साम्राज्य की नींव के साथ प्रारंभ हुआ। इस काल में सभ्यता ने संस्कृति को दबाने की चेष्टा की अतः संस्कृति का यथार्थ स्वरूप उभर नहीं सका। जब भारत में ब्रिटिश राज़ था तो उस समय स्वामी विवेकानन्द जी और महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को देश-विदेशों में काफी उजागर किया। आज के दौर में भी भारत की सांस्कृतिक विरासत इसकी ५००० वर्ष पुराणी संस्कृति एवं सभ्यता है। भारत की पुरानी सभ्यता एवं सांस्कृतिक जीवन ने विश्व में अपनी गहरी पहचान छोड़ी है। भारतीय सभ्यता हमेसा से ही गतिशील रही है एवं इस सभ्यता की परम्पराओं को दुनिया ने अपनाया एवं लाभ उठाया। सभ्यताओं में सर्वप्रथम आध्यात्मिक सभ्यता का असर इस प्रकार है की, केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारतीय मंदिरों का विशेष अस्तित्व है तथा भारतीय आध्यात्मिक सभ्यता को दूर-दूर तक फैला रहा है। विदेशों में स्थित कुछ भारतीय मंदिर जैसे श्री सुब्रमण्यम देवस्थान, अंगकोर वट (कम्बोडिआ), श्री स्वामी नारायण (ब्रिटैन), राधा माधव धाम अमेरिका, श्री स्वामी नारायण मंदिर अमेरिका आदि कुछ अन्य बड़े मंदिर विदेशों में स्थित है जो भारत की आध्यात्मिक सभ्यता का बड़ा प्रमाण है। इस्कॉन (अंतरराष्ट्रीय कृष्णा भावना मृत संघ) जो 1966 में न्यूयोर्क शहर से प्रारम्भ हुई कृष्णा भक्ति की निर्मल धारा शीघ्र ही विश्व के कोने-कोने में बहने लगी। भारतीय संस्कृति ने नैतिक एवं आध्यात्मिक परम्पराओं के साथ-साथ भारत ने विश्व को एक वरदान भी दिया है। जो मन एवं शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करने में मानव की मदद करता है। जिसे हम योग कहते है योग शब्द संस्कृत की यूज़ धातु से बना है जिसका अर्थ जुड़ना या एकजुट होना होता है की जब से सभ्यता शुरू हुई है, तभी से योग किया जा रहा है, योग के विज्ञान की उत्पति हज़ारो साल पहले हुई थी। आज के समय हमारे धार्मिक ग्रन्थ जैसे रामायण और गीता विश्व के लगभग प्रचलित भाषाओ में उपलब्ध है। सन 1950 में भारतीय सांस्कृतिक सम्भन्ध परिषद् (इंडियन कॉउन्सिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स-ICCR) की स्थापना की गयी थी इस संस्था का मुख्यालय नई दिल्ली में है इस संघठन के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु, कलकत्ता,चंडीगढ़, चेन्नई, जकार्ता, मॉस्को, बर्लिन कैरो, लंदन, ताशकंद, जॉहन्सबर्ग, डरबन, कोलंबो में है। इस संस्था का मुख्या उद्देस्य भारत की संस्कृति एवं परम्पराओं का विदेशों में विकास एवं उत्थान है, जैसे की विदेशों में प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना, विदेशों में भारतीय महोत्सव का आयोजन, अभिनय कलाकारों द्वारा विदेशों में व्याख्यान प्रस्तुतियाँ आयोजन, विश्व में भिन्न - भिन्न देशों में स्थित विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन पीठों की स्थापना और प्रचार - प्रसार करना। आज भारत की इन उपरोक्त परम्पराओं से पूरा विश्व धन्य है एवं भारत की इन परम्पराओं का सदा ऋणी रहेगा। वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की सम्वहिका के रूप में हिंदी बहुत ही महत्वपूर्ण भुमिका निभाती आ रही है। यहाँ की संस्कृति आज भी अपने मूल अस्तित्व में हिंदी के द्वारा विश्व भर में लोकप्रिय है। दूर देश से निकलने वाली हिंदी पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (संयुक्त राज्य अमीरात), मॉरीशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी संगठन (मॉरीशस) हिंदी सोसाइटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है |

* **सन्दर्भ:**

1. <https://www.hinditracks.in/hindi-as-a-conduit-of-indian-culture-globally>
2. <https://www.drishtiias.com/hindi/model-essays/unique-form-of-indian-culture>
3. <https://www.pravakta.com/vaishwik-unnati-ka-aadhar-bharatiya-sanskriti/>
4. <https://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/lekh1st_nonhin2019-20.pdf>
5. <https://patrikayan.vishwahindi.com/content.aspx?id=210609081104010100>
6. <https://www.unionbankofindia.co.in/pdf/union-srujan-apr-jun-2019.pdf>